योगेन्द्र प्रताप मौर्य

१

एक धुँधलका छाया है

आज हवा में हमने
जहर मिलाया है,
छोड़ पटाखे
गहन धुआँ फैलाया है।

जाने कितने घर में
मौन-उदासी छायी है,
जलती हुई पराली से
दिल्ली घबरायी है,

कितनी ही साँसों पर
संकट आया है?

धीरे-धीरे अंधकार की
हुई बहाली है,
सूरज भी निस्तेज
कहीं गुम इसकी लाली है,

कई दिनों से
एक धुँधलका छाया है।

२

निर्मम बुलडोजर।

रौंद रहा है जंगल को
निर्मम बुलडोजर।

जल-जमीन पर फिर से
उसकी नजर गड़ी है,
और साथ में वर्दी भी गन
लिए खड़ी है,

डरा रहा है झोपड़ियों को
कब से हूटर।

चीख रहे हैं पेड़ यहाँ पर
कौन बचाए,
भाग कहाँ जायेंगे आखिर
अब चौपाये,

ढूँढ़ रही है इधर-उधर
चिड़िया अपना घर।